Course -- B.Ed,Part --1

Paper-- 7th, Learning and Assessment

Prepared by -- Dr Meena Kumari

Topic-- Tools of Evaluation,(Rating scales,.... continued)

----------+----------

निर्धारण मापनी

प्रस्तावना -- मूल्यांकन की प्रक्रिया शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। सतत अथवा व्यापक मूल्यांकन के द्वारा अब बच्चों के मनोवैज्ञानिक कारक सामाजिक कारक तथा व्यवहारात्मक कारकों को भीमापा जाता है । अधिकतर अलग अलग स्तर को मापने के लिए अलग-अलग उपकरण उपयोग में लाए जाते हैं। निर्धारण मापनी एक व्यक्तिनिष्ठ विधि है। अधिकांशतया इस उपकरण का प्रयोग व्यावहारिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में किया जाता है ,लेकिन आज शोध के अनेक क्षेत्रों में भी इसे व्यापक रूप में इस्तेमाल में लाया जा रहा है।

निर्धारण मापनी का अर्थ -- निर्धारण का अर्थ होता है किसी वस्तु चरित्र, गुण या परिस्थिति के विषय में अपनी राय या निर्णय देना ।निर्धारण मापनी उस उपकरण को कहते हैं जिसमें किसी गुण के दिए गए आयाम का वर्णन करने के लिए भिन्न-भिन्न बिंदु होते हैं ,जो उनकी भिन्न-भिन्न मात्रा बताते हैं।समानतया निर्धारण मापनी एक ऐसी शोध उपकरण है जिसके माध्यम से किसी वस्तु, व्यक्ति या घटना को एक दिए गए वर्ग मापनी के रूप में मापता है, उदाहरण स्वरूप जब शिक्षक छात्रों में अनुशासन को अत्यधिक अनुशासित ,मध्यम अनुशासित, साधारण अनुशासित तथा बिल्कुल नहीं केवर्ग मापनी के रूप में मापते हैं तो यह निर्धारण मापनी का एक उदाहरण होता है ।कुछ मुख्य परिभाषा निम्न वत हैं --
गुड तथा स्केट के अनुसार निर्धारण मापनियां मूल्यांकन की जाने वाली वस्तु के विभिन्न खंडों की ओर ध्यान आकर्षित करती है लेकिन इसमें इतने प्रश्न या वर्ग नहीं होते हैं जितने जांच सूची या प्राप्प्तांक कार्ड में होते हैं।
वान डेलेंन के अनुसार निर्धारण मापनी किसी चर की मात्रा तथा बारंबारता को निश्चित करती है।
निर्धारण मापनिओं का प्रयोग विशेषकर व्यक्ति के प्रभाव के अध्ययन में किया जाता है, जो अध्ययन करता के संपर्क में आते हैं ।निर्धारण मापनी के माध्यम से सामाजिक मूल्य ,क्षमता ,समूह स्तर तथा इस प्रकार के अन्य विशिष्ट क्षेत्रों में व्यक्ति का निर्धारण किया जाता है ।विभिन्न गुणों से चतुर, नेतृत्व ,उदारता सहयोग , नियमितता, प्रभावशीलता, संवेगात्मक नियंत्रण ,अध्ययन ,आदतें तथा व्यक्तिगत आकर्षण आदि अनेक प्रकार के गुणों के विषय में निर्धारण किया जाता है।

(3) निर्धारण मापनियों के प्रकार --
निर्धारण मापनियों का विकास अनेक प्रकार से हुआ है।इसलिए मापनियों के प्रकार भी अलग अलग है। इसके मुख्य प्रकार निम्नलिखित भागों में बांटा गया है--

१) संख्यात्मक मापनी -- संख्यात्मक मापनी में निर्धारक निरीक्षक को अंको का एक निश्चित क्रम देता है। निरीक्षक प्रत्येक उद्दीपन जिसका मूल्य निर्धारण करना हो कि तीव्रता की दृष्टि से उसे उचित अंक प्रदान करता है ।उदाहरण के लिए इस मापनी का प्रयोग 9 बिंदुओं पर करने के लिए मूल्यों का निर्धारण किया जा सकता है। उदाहरण स्वरूप ---

आंकिक संकेत- अर्थ या परिभाषा
१---- अत्यधिक उपयोगी
२-अधिक उपयोगी
३-साधारण उपयोगी
४-हल्का उपयोगी
५-उदासीन
६-हल्का अनुपयोगी
७-साधारण अनुपयोगी
८-अधिक अनुपयोगी
९-अत्यधिक अनुपयोगी
निर्धारक को जिस वस्तु का निर्धारण करना है उससे संबंधित कथन निर्धारण मापनी में छपे होते हैं। प्रत्येक कथन को पढ़कर निर्धारक अपनी प्रतिक्रिया अंक के आधार पर व्यक्त करता है प्रणाली अंक नहीं दिए जाते निर्धारक केवल दिए गए विवरण या परिभाषा के आधार पर निर्धारण करता है और बाद में उन्हें अंक प्रदान करता है इस प्रकार के अंतिम आपकी का एक उदाहरण निम्नांकित है
बहुत भारी
भारी
सामान्य
हल्का
बहुत हल्का

अर्थात 9 बिंदुओं कीदो की जगह 7 बिंदु 5 बिंदु तथा तीन बिंदु वाले भी निर्धारण मापनी उपयोग में लाए जा सकते हैं ।हमेशा बिंदु विषम संख्या में रखना उपयोगी होता है जैसे 3,5,7 इत्यादि ।ऐसी दशा में सकारात्मक और नकारात्मक दिशा के बीच की उदासीन बिंदु भी रहता है संख्यात्मक मापनी का निर्माण और उपयोग सरल होता है और इसको समझना भी आसान होता है ।फिर भी संख्यात्मक में दूसरे की तुलना में पीछे रह जाती है क्योंकि इसमें काफी त्रुटियां और पूर्वाग्रह भी शामिल होता है ।

२) आलेख मापनी -- यह बहुत प्रचलित एवं प्रयोग में आने वाली निर्धारण मापनी है। इस मापनी में क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर रूप में सरल रेखा पर निरीक्षक की सहायता के लिए संकेत बिंदु बनाए जाते हैं ।सरल रेखा खंडित या अखंडित दोनों प्रकार की हो सकते हैं यदि सरल रेखा खंडित है तो ये परिस्थितियों के अनुसार अलग-अलग हो सकती है। इस प्रकार की मापनी का उदाहरण नीचे दिया गया है।
वर्ग में शिक्षक की शिक्षण शैली कितना प्रभाएशाली था ,इसको आलेख के द्वारा दिखाया का सकता है। आलेख मापनी के अनेक लाभ है। यह सरल होती है तथा संचालन भी आसान होता है । ज यह निरीक्षक के लिए रुचिकर होता है। इसके लिए अभिप्रेरणा की आवश्यकता कम होती है ।कभी-कभी इसका अंकन करना कुछ कठिन भी होता है।

३)मानक मापनी --- मानक मापनी में निर्धारक को कुछ निश्चित मापदंड दिए जाते हैं! आमतौर पर यह मानदंड एक ही प्रकार की वस्तुएं होती है !जिनका निर्धारण पूर्व निर्धारित मानकों के आधार पर किया जाता है.! उदाहरण के लिए किसी व्यक्ति के लेख की गुणवत्ता को जांचने के लिए कुछ पूर्व निर्धारित नमूने जिनको उपयुक्त विधि द्वारा एक साझी मापनी पर मूल्य अंकित किया हुआ होता है, दिए जाते हैं! 'व्यक्ति से व्यक्ति' तक तथा प्रतिचित्र ' मिलान दो येसी विधियां हैं जो मानक मापनी के सिद्धांतों पर आधारित है।

४) संचई विंदुओं द्वारा निर्धारण -- यह मापनी काफी लोकप्रिय है तथा इसका उपयोग व्यवहारपरक विज्ञान में सर्वाधिक हुआ है।इस प्रकार की मापनी में निर्धारित व्यक्तियों को मापनी पर के सभी एकांशों पर निर्धारित करता

है और बाद में उन सभी व्यक्तिगत निर्धारण का एक योग ज्ञात करता है।यह योग हीं प्रत्येक व्यक्ति के मापन का कुल प्राप्तांक होता है जिसका विश्लेषण करके निर्धारक एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुंचता है ।इस मापनी के विभिन्न बिंदुओं पर आधारित मूल्यांकन में पांच सूची विधि तथाअनुमान कौन विधि काफी लोकप्रिय है।

५) बाधित चयन निर्धारण मापनी -- बाधित चयन निर्धारण मापनी में एक एकांश में दो या दो से अधिक गुणों का एक सेट होता है ।इनमें से किसी एक को चुन कर निर्धारण करना होता है। किसी एकांश के भीतर आने वाले सभी गुण समान रुप में अनुकूल या प्रतिकूल दिखते हैं ।जिनमें से निर्धारकों किसी एक को उसके विचार में किए जाने वाले व्यक्ति के लिए सही होता है ,उसको चुनने के लिए बाध्य होना पड़ता है।